DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email-Kdkbharti08@gmail.com
BA Part-1 Date-08-08-2020
Mo.No-9234999361

स्वतंत्रता क्या है?स्वतंत्रता की नकारात्मक एवं सकारात्मक धारणा का वर्णन करें।

स्वतंत्रता जीवन का सबसे पवित्र अधिकार है। इसकी प्राप्ति के लिए प्रारम्भ से ही मानव संघर्ष करता रहा है।यह मानव की स्वाभाविक विशेषता है।आधुनिक युग में 'स्वतंत्रता'शब्द का प्रयोग जिस प्रसंग में किया जा रहा है उसे फ्रांसीसी क्रांति की देन कह सकते हैं।फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व का नारा बुलंद किया था।इसी से हमने अपने राष्ट्रीय संग्राम में "स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"का नारा बुलंद किया था।

स्वतंत्रता अँग्रेजी शब्द 'लिबर्टी' *(Liberty)*का हिन्दी रुपांतरण है।अँग्रेज़ी के इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'लिबर' *(Liber)*शब्द से है जिसका अर्थ होता है--बंधनों का न होना।अतः, व्युत्पत्ति की दृष्टि से स्वतंत्रता का अर्थ बंधनों का अभाव होता है।अर्थात स्वतंत्रता के इस संदर्भ में मनुष्य की इच्छा और कार्य पर किसी प्रकार का बंधन नहीं होता।इसका अर्थ स्वेच्छाचारिता तथा अराजकता होता है।

हॉब्स ने कहा भी है कि-"स्वतंत्रता का अर्थ बंधनों के अभाव से है।"महान दार्शनिक रुसो के अनुसार,--मनुष्य स्वतंत्र रूप से जन्म लेता है, लेकिन सभी जगह बंधनों में रहता है।लेकिन, स्वतंत्रता का यह गलत और भ्रामक अर्थ है।स्वतंत्रता का अर्थ बंधनों का अभाव तथा रुकावट नहीं है।बंधनों के पूर्ण अभाव की अवस्था को स्वतंत्रता न कहकर स्वेच्छाचारिता कहा जाता है।निरंकुश या असीमित स्वतंत्रता को ही स्वेच्छाचारिता कहा जाता है।
स्वेच्छाचारिता की स्थिति में 'मत्स्य न्याय'और जिसकीलाठी उसकी भैंस का बोलबाला रहता है।जहाँ तक स्वतंत्रता के सही अर्थ का प्रश्न है, वह पूर्ण स्वतंत्रता अर्थात स्वेच्छाचारिता नहीं है।इसके सही अर्थ की व्याख्या करने के पूर्व हमें राजनितिशास्त्र के विद्वानों द्वारा स्वतंत्रता के संबंध में की गई परिभाषाओं पर विचार करना चाहिए। वास्तविकता है कि स्वतंत्रता का रूप नकारात्मक नहीं वरन् सकारात्मक है।इसका अर्थ बंधनों का अभाव नहीं वरन् सामाजिक बंधनों से जकड़ा हुआ है।
हरबर्ट स्पेंसर के अनुसार--प्रत्येक मनुष्य वह करने को स्वतंत्र है जिसे वह करने की इच्छा करता है, यदि वह किसी दूसरे मनुष्य की समान स्वतंत्रता की हनन नहीं करता हो।
लॉस्की के अनुसार----स्वतंत्रता उन सामाजिक दशाओं के ऊपर नियंत्रण का अभाव है जो कि आधुनिक सभ्यता में व्यक्ति के सुख के लिए आवश्यक है।
ग्रीन के शब्दों में-----स्वतंत्रता उन कार्यों को करने या बंधनों का उपयोग करने की शक्ति है जो करणीय और उपभोग है।

स्वतंत्रता सम्बन्धी उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर स्वतंत्रता के दो पक्ष हैं---
*1.*नकारात्मक तथा
*2.*सकारात्मक

*1.*नकारात्मक----शास्त्रीय उदारवादियों के मतानुसार स्वतंत्रता बहारी बाधाओं का है।व्यक्ति की इच्छा और उसके कार्यों पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए।व्यक्ति को अपने अंतःकरण के अनुसार कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए।व्यक्ति सिर्फ अपने सही विवेक की आज्ञा के अनुसार कार्य करेगा।नकारात्मक स्वतंत्रता के प्रतिपादकों का विचार है कि, यह सिर्फ वह क्षेत्र है जिसमें व्यक्ति दूसरे से बाधा रहित कार्य कर सकें। नकारात्मक स्वतंत्रता के समर्थक किसी तरह के हस्तक्षेप को नहीं चाहते हैं।लेकिन, सभी प्रकार के बंधनों को हम स्वतंत्रता नहीं कह सकते, क्योंकि सभी प्रकार के बंधनों का अभाव अराजकता एवं स्वतंत्रता होगी।

नकारात्मक स्वतंत्रता की विशेषताएँ----
*1.*स्वतंत्रता राज्य या समाज द्वारा आरोपित प्रतिबंधों का अभाव है।
*2.*राज्य की सत्ता और व्यक्ति की स्वतंत्रता में स्वाभाविक विरोध है।
*3.*वह सरकार सबसे अच्छी है जो सबसे कम शासन करती है।
*4.*जीवन संपत्ति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता असीम है।
*5.*नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रताएँ व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

सकारात्मक स्वतंत्रता-----

स्वतंत्रता की सही और उचित व्याख्या केवल सकारात्मक अर्थ में हो सकती है क्योंकि वास्तव में यह एक सकारात्मक वस्तु है।इसका अर्थ केवल बंधनों के अभाव से नहीं है, इसका अर्थ है, आत्मविकास के लिए वास्तविक अवसर या मनुष्य के व्यक्तित्व के निरंतर विकास का अवसर।व्यक्तित्व के विकास के लिए सुअवसरों का सर्वाधिक उपयोग वहीं पर हो सकेगा, जहाँ अधिक से अधिक अधिकारों की रक्षा का प्रश्न हो।अतएव सकारात्मक अर्थ में स्वतंत्रता का अभिप्राय आत्मविकास अथवा अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए उपलब्ध समुचित अवसर से है।अपने सकारात्मक अर्थ में स्वतंत्रता का अर्थ नागरिकों के सर्वांगीण विकास से है।
गेटेल ने कहा है कि--"स्वतंत्रता का समाज मेंसिर्फ नकारात्मक स्वरूप ही नहीं, वरन् सकारात्मक स्वरूप भी है।"स्वतंत्रता का एक मात्र लक्ष्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व का विकास करना है इसी दृष्टि से टी.एच.ग्रीन ने कहा है कि--सकारात्मक स्वतंत्रता की धारणा का प्रतिपादन किया, सबसे पहले तो स्वतंत्रता के सकारात्मक स्वरूप की नकारात्मक स्वरूप से भिन्नता बताते हुए टी.एच.ग्रीन ने लिखा हे कि--जिस प्रकार सौंदर्य कुरूपता के अभाव का नाम ही नहीं होता, उसी प्रकार स्वतंत्रता प्रतिबंधों के अभाव का नाम नहीं है।आधुनिक समय में लॉस्की और गार्नर आदि विद्वानों ने सकारात्मक स्वतंत्रता की धारणा को ही अपनाया है।लॉस्की स्वतंत्रता को मनुष्य के विकास हेतु अतिआवश्यक शर्त मानते हुए स्वतंत्रता की व्याख्या करते हैं,-स्वतंत्रता उस वातावरण को बनाए रखना है, जिसमें व्यक्ति को अपने जीवन का सर्वोत्तम विकास करने की सुविधा प्राप्त हो।इस प्रकार, सकारात्मक सिद्धन्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आम व्यक्ति अपने हित को समझने में असमर्थ होते है।

सकारात्मक स्वतंत्रता के लक्षण----
*1.*सम्पूर्ण प्रतिबंधों का अभाव स्वतंत्रता नहीं, वरन् स्वच्छंदता है।वास्तविक स्वतंत्रता उचित बंधनों द्वारा मर्यादित होने में निहित है।
*2.*राज्य की सत्ता और व्यक्ति की स्वतंत्रता में कोई विरोध नहीं है।राज्य द्वारा उत्पन्न अनुकूल परिस्थितियों में ही व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।
*3.*केवल बाह्य परिस्थितियाँ ही वास्तविक स्वतंत्रता प्रदान नहीं कर सकती।
*4.*नागरिक को राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी देनी होगी।
*5.*पूँजीपतियों और मजदूरों के आर्थिक हितों में सामंजस्य लाना होगा।

आगे, धन्यवाद।

2020-08-08
© From vivo Note

Scanned with CamScanner